सतयुग दर्शन संगीत कला केन्द्र, वसुन्धरा, फरीदाबाद

प्रयाग संगीत समिति इलाहाबाद द्वारा

(प्रवेशिका परीक्षा,तबला,मृदंग तथा पखावज का पाठ्यक्रम)

क्रियात्मक परीक्षा (70 अंक)

1. तीनताल में 2 सरल कायदा। 2-2 पलटों और 1-1 तिहाई सहित।

2. दादरा, कहरवा, तीनताल और चारताल के ठेके को ताली देकर ठाह, दोगुन में बोलना और उन्हें बजाना।

शास्त्र- परीक्षा (30 अंक)

1.तबले के वर्णों का साधारण ज्ञान एवं सचित्र सहित वर्णन कीजिए।

2. तबले के अंगो का ज्ञान तथा उनकी पहचान।

3. निम्नलिखित शब्दों की परिभाषा और ज्ञानः-

1.ठेका 2.ताल 3.सम 4.ताली 5.खाली 6.लय 7.विभाग 8.बोल 9.मात्रा 10.आवर्त्तन 11.चाँटी 12.स्याही 13.गट्टा

4. एक प्रसिद्ध तबला वादक की जीवनी।

S.D.S.K.K.

क्रियात्मक-परीक्षा - (अंक-100)

1. लय-ज्ञानः- प्रत्येक मात्रा पर ताली देते हुए अंकों को बोल कर लय की स्थिरता दिखाना। विलम्बित, मध्य, द्रुत-लय, दोगुन, चौगुन और विभिन्न सरल मात्रा विभागों को ताली देकर दिखाने का अभ्यास।

(i) तबले के विद्यार्थियों के लिये तीनताल, झपताल, एकताल, चारताल और दादरा तालों के ठेकों की ताली देकर ठाह तथा दोगुन में बोलना और उन्हें तबले पर बजाना।

(ii) तबले के विद्यार्थियों के लिये तीनताल में 4 सरल कायदे 4-4 पलटों सहित, ठेके की किस्में, 2 मोहरे, 2 तिहाइयाँ और 2 सरल टुकड़े।

(iii) झपताल, और चारताल में 2-2 छोटे टुकड़े।

(iv) दादरा के ठेके की कुछ किस्में।

शास्त्र - (अंक-50)

1.तबला अथवा मृदंग (पखावज) के वर्णों का ज्ञान।

2.उपरोक्त तबला और मृदंग (पखावज) के पाठ्यक्रम में दिये गये तालों व ठेकों का पूर्ण परिचय तथा उन्हें ठाह और दून में मात्रा, विभाग, सम, ताली, ताली-खाली आदि दिखाकर भातखंडे या विष्णु-दिगम्बर ताललिपि पद्धति लिखना।

(i) टुकड़े, परनें तथा मोहरों आदि को भी ताललिपि में लिखना।

3.तबला अथवा मृदंग के अंगो का ज्ञान तथा उनका वर्णन।

4.तबला अथवा मृदंग की उत्पत्ति का साधारण ज्ञान।

5.भातखंडे या विष्णु-दिगम्बर ताललिपि पद्धति का साधारण ज्ञान।

6.निम्नलिखित शब्दों की परिभाषाएँ और उनका ज्ञानः-

1.ताल 2.लय 3.विभाग 4.बोल 5.मात्रा 6.सम 7.ताली 8.खाली 9.आवर्त्तन 10.ठेका 11.कायदा 12.पलटा 13.तिहाइ 14.मोहरा 15.मुखड़ा 16.टुकड़ा 17. रेला- 18.परन- 19. लग्गी- 20. पेशकार

क्रियात्मक-परीक्षा - (अंक-100)

1. लय ज्ञानः- ठाह, दून और चौगुन लयों को हाथ पर ताली देते हुए अंकों और ठेकों द्वारा दिखाना तथा तबला अथवा पखावज पर बजाकर दिखाना।

2.(i) तीनताल में अन्य 4 कठिन कायदें, चार-चार पलटों सहित।

(ii) 2 सरल रेले, ठेके की किस्में ।

(iii) 2 सुन्दर मुखड़े, 2 उठान, 2 मोहरे, 2 तिहाइयाँ, 2 कठिन टुकड़े और 2 सरल परनें।

(iV) झपताल, एकताल और चारताल में कुछ ठेके की किस्में, 2 मुखड़ें, 1उठान, 2 मोहरे, 2 तीहे, 2 सुन्दर टुकड़ें,।

3. (i) रूपक, सूलताल, तीवरा, दीपचन्दी, कहरवा और तिलवाड़ा तालों के ठेकों को ताली देकर दून और चौगुन लयों में बोलना और तबले पर बजाना। कहरवा के अतिरिक्त इन सभी तालों में 2 मुखड़े, 2 मोहरे, 2 तीहे और दो सरल टुकड़े।

iii) कहरवा के ठेके की कुछ किस्में।

शास्त्र-परीक्षा- (अंक- 50)

1. प्रथम और द्वितीय वर्ष की तालों को ठाह, दोगुन तथा चौगुन आड़ लयों में तथा उनके टुकड़ें को तालिपि में लिखना।

2.परिभाषा एवं व्याख्याः-

1.ताल, 2.लय, 3.विभाग, 4.बोल, 5.मात्रा 6.सम, 7.ताली, 8.खाली, 9.आवर्त्तन, 10.ठेका, 11.कायदा,12.पलटा,13.तिहाई 14.मोहरा, 15.टुकड़ाः- 16. लग्गी- 17. पेशकार- 18. ध्वनि 19. ध्वनि की उत्पत्ति- 20. आन्दोलन - 21. नाद 22. उठान- 23. संगत-

3. भातखंडे या विष्णु-दिगम्बर तालिपि पद्धति का साधारण ज्ञान।

4. किसी वर्तमान काल के प्रसिद्ध तबला वादक की जीवनी।

5. संगीत में तबले का महत्त्व।

क्रियात्मक-परीक्षा-(अंक 100)

1. लय-ज्ञान विशेष :- दोगुन, तिगुन, चौगुन और आड़लयों की ताली देते हुए अंक बोल कर दिखाना।

2. तबला अथवा मृदंग मिलाने का ज्ञान। गीतों के साथ संगत करने का प्रारम्भिक अभ्यास।

3. तालिपि में लिखे बोलों और टुकड़ों आदि को देखकर बोलना और बजाना।

4. (i) हाथ की सफाई और तैयारी पर विशेष ध्यान।

(ii) तीनताल में अन्य सुन्दर मुखड़े, मोहरे, तीहे, कायदे-पल्टे, रेले, टुकड़े, परनें, ठेके की किस्में और सरल गतें।

(iii) झपताल, एकताल और चारताल में भी नये सुन्दर मुखड़े, मोहरे, तीहे, ठेके की किस्में, कायदे-पल्टे, (चारताल के अतिक्ति) 2-2 रेले और 2-2 बड़ी परनें।

(v) सूलताल और तीवरा में अन्य सुन्दर 2-2 मुखड़े, 2-2 मोहरे, 2-2 तीहे, 2-2 टुकड़े और 2-2 परनें।

5. नये तालः-

(i) आड़ा चारताल, धमार, धुमाली, झूमरा, जत तालों को ठाह, दून और चौगुन में ताली देकर बोलना तथा ठाह लय में सुन्दरता-पूर्वक तबले अथवा मृदंग पर साफ-साफ बजाना।

(ii) पिछले वर्षों की तालों के ठाह, दुगुन,तथा चौगुन लयों में ताली देकर बोलना।

(iii) आड़ा-चारताल, धुमाली, झूमरा तथा जत में 2-2 कायदें, 2-2 टुकड़े 1-1 परनें, 2-2 तिहाई तबले पर बजाने का अभ्यास।

(iV) धमार, तीवरा, और सूल तालों में साथ संगत, 2-2 तिहाइयाँ, 2-2 परनें तथा लपेट, पखावज पर बजाने का अभ्यास।

शास्त्र-परीक्षा -(अंक 50)

1. सभी तालों के ठेकों को ठाह, दुगुन, तिगुन तथा चौगुन लयकारियों को ताल-लिपि में लिखना और उनके परन, टुकड़ों आदि को भी तालिपि में लिखने का ज्ञान।

2. परिभाषाएँ और विषयः-

संगीत,गत,आड़,बाँट, श्रुति, स्वर, शुद्ध स्वर, विकृत स्वर, सप्तक के प्रकार, मध्य सप्तक, तार सप्तक, चल स्वर, अंचल स्वर, आरोही, अवरोही,मृदंग, पखावज के अंगों का ज्ञान (आटे का उदेश्य, तबले और मृदंग (पखावज) की तुलना, उनका विस्तृत इतिहास तथा उनको मिलाने की विधि, तबले के विभिन्न बाज। जातियों का अध्ययन तथा तिस्त्र, चतस्त्र, मिश्र, खण्ड तथा संकीर्ण जातियों की परिभाषाएँ।

3.मृदंग (पखावज) के विद्यार्थियों को तबले के अंगों तथा वणों का ज्ञान और तबले के विद्यार्थियों को मृदंग (पखावज) के अंगों तथा वणों का ज्ञान।

4. तबला एवं मृदंग (पखावज) वादकों के शास्त्रों में वर्णित गुण व दोष का अध्ययन।

5.संगीत से सम्बन्धित विषयों पर निबन्ध जैसे- मानव जीवन में संगीत। संगीत में तबला अथवा मृदंग (पखावज) का स्थान। संगीत सीखने से लाभ। भारतीय-संगीत में ताल-वाद्यों का स्थान। अवनद्ध वाद्यों में तबला अथवा मृदंग (पखावज) का स्थान आदि।

6. अहमद जान थिरकवा तथा कन्ठें महाराज का संक्षिप्त जीवन परिचय।

S.D.S.K.K.

सतयुग दर्शन संगीत कला केन्द्र, वसुन्धरा, फरीदाबाद
प्रयाग संगीत समिति इलाहाबाद द्वारा
(चतुर्थ-वर्ष, तबला,मृदंग तथा पखावज का पाठ्यक्रम)

क्रियात्मक-परीक्षा-(अंक 100)

1-लयज्ञान- ताली द्वारा लय दिखाना जैसे -1 मात्रा में 2 मात्रा, 2 मात्रा में 1, 1 मात्रा में 3, 1 में 4, 2 में 6 (आड़ा), 3 में 2, 3 में 4, 4 में 3 (पौनगुन), कुछ अन्य कठिन मात्रा विभागों का अभ्यास जैसे आड़ (डेढ़ गुना), कुआड़ (सवागुन) तथा विअअन ((पौने दो गुना)।

2- ताल-लिपि देखकर बोल, टुकड़े,परन आदि तबले अथवा मृदंग (पखावज) पर निकालना।

3- तबला अथवा मृदंग (पखावज) मिलाने और गीतों, गतों तथा लहरे के साथ सरल तालों में संगत करने का अभ्यास।

4- पिछले तालों में विशेष सफाई और तैयारी तथा कुछ आगे का काम, उदाहरणार्थ - तीनताल, झपताल, एकताल, और चारतालों में कुछ सुन्दर कस्में मुखड़े, उठान, तीहे, मोहरे, कायदे, पलटे, रेले, टुकड़े, परनें और गतें तथा कुछ विभिन्न मात्राओं की तिहाइयां और चक्करदार टुकड़े। तीनताल, झपताल और एकताल में पेशकारे का काम,

चारताल में कुछ स्वतन्त्र रेले और बड़ी परनें। दादरा तथा कहरवा ताल में लग्गियां, लड़ियां और ताबेयतदारी,। सूल और तीव्रा ताल में कुछ अच्छे मुखड़े और टुकड़े। रूपक, धमार और आड़ा चारताल में कुछ किस्में मोहरे,तीहे, और 2 मुखड़े। नृत्य के बोलों का ज्ञान।

5-नए ताल- पंचम सवारी , टप्पा, अद्धा, पंजाबी, गजझम्पा, मत्त ताल के ठेकों को केवल ठाह में बजाने का और ताली सहित बोलने का अभ्यास।

6 - तबले के विद्यार्थियों की तीनताल, झपताल, एकताल, आड़ा चारताल, तथा स्वतन्त्र वादन का अभ्यास तथा मृदंग के विद्यार्थियों को चारताल,सूलताल, तेवरा तथा धमार में स्वतन्त्र वादन का अभ्यास।

शास्त्र-परीक्षा- (अंक 50)

1 पिछले और इस वर्ष के तालों को विभिन्न लयकारियों जैसे- दुगुन, तिगुन, चौगुन, आड़ और कुआड़ आदि सहित ताल-लिपि में लिखने का ज्ञान। विभिन्न प्रकार के कायदें, टुकडें, परनें आदि को भातखंडे तथा विष्णु-दिगम्बर दोनों तालिपियों में लिखने का पूरा ज्ञान होना चाहिए।

2. विष्णु दिगम्बर तथा भातखंड़े ताल-लिपि पद्धतियों का सूक्ष्म तुलनात्मक अध्ययन तथा उनके गुण व दोष।

3. पिछले वर्षों के सभी पारिभाषित शब्दों का विस्तृत-अध्ययन तथा उनका क्रियात्मक महत्त्व।

(i) पेशकाराः- (ii) साथ-संगतः- (iii) लग्गीः- (iv) लड़ीः- (v)परनः-

(vi) गत-कायदा- (vii) तिपल्ली- (viii) चलन (चाला):-

4. गणित द्वारा विभिन्न-तालों की दुगुन, तिगुन, चौगुन, आड़, तथा कुआड़ आदि प्रारम्भ करने के स्थान को निकालना तथा उनको ताल-लिपि में लिखना।

5. समान मात्रा वाले तालों का तुलनात्मक अध्ययन।

6. संगीत से सम्बन्धित विषयों पर निबन्ध -जैसे- संगीत में ताल का महत्त्व, संगत का महत्त्व, संगीत में लय तथा ताल का स्थान, तबला संगीत का उदेश्य तथा विधि, लय और लयकारी, साथ और संगत आदि।

7 ताल के दस प्राण तथा उनका भारतीय-संगीत में महत्त्व।

8 मोदू खाँ, बख्शू खाँ, नत्थूखाँ, आबिद हुसेन, रामसहाय जी का जीवन परिचय तथा तबला-वादन क्षेत्र में उनका स्थान तथा कार्य।

9 पारिभाषिक शब्दों का ज्ञानः- वर्ण (स्वर के विषय में), थाट प्रचलित 10 थाटों के नाम तथा उनके स्वर, राग, राग-जाति औड़व, षाडव संम्पूर्ण ।

S.D.S.K.K.

सतयुग दर्शन संगीत कला केन्द्र, वसुन्धरा, फरीदाबाद

प्रयाग संगीत समिति इलाहाबाद द्वारा

(पंचम वर्ष, तबला,मृदंग तथा पखावज का पाठ्यक्रम)

क्रियात्मक-परीक्षा-(अंक 100)

1. लय- ज्ञान में विशेष निपुणता। अति विलम्बित, मध्य और द्रुत्त लयों मे तबले पर विभिन्न तालों को गीतों गतो और लहरों के साथ बजाने का समुचित अभ्यास। कुछ कठिन लयकारियों का ज्ञान तथा उन्हें ताली देकर बोलना जैसे-4 मात्रा में 5 मात्रा सवागुन 4 में 6 मात्रा पौनगुन आड़, कुआड़ , बिआड़। तबला मिलाने में निपुणता।
2. तबला अथवा पखावज पर पिछले वर्षो के तालों में विशेष तैयारी और उनमें सुन्दरता के साथ स्वतंत्र वादन (सोला) की क्षमता।
3. नए तालः- शिखर, ब्रह्म, रूद्र, लक्ष्मी तालों के ठेके को ताली देकर बोलना और तबले अथवा मृदंग (पखावज) पर बजाना । गजझम्पा तथा मत्त तालों में सरल टुकड़े परन आदि बजाना।
4. तबले के विद्यार्थियों को मृदंग (पखावज) पर तथा मृदंग के विद्यार्थियों को तबले पर हाथ के रख - रखाव का ज्ञान।
5. प्रचलित गायन तथा तंत्रवादन शैलियो के साथ संगत करने का ज्ञान।

शास्त्र-परीक्षा- (अंक 50)

1. पाठ्यक्रम के सभी तालो के ठेकों का सभी लयकारियों में तालिपि में लिखना। टुकड़े, परन आदि को भी तालिपि में लिखने का पूर्ण ज्ञान।
2. विभिन्न मात्राओं के नये टुकड़े आदि बनाने तथा गणित द्वारा विविध लयकारियों के प्रारम्भिक स्थान निकालने का ज्ञान।
3. परिभाषा और व्याख्या- कुआड़, बिआड़, फरमाइशी, बन्दिशें (रचनायें), लोम-विलोम, सवागुन, पौनगुन,आदि। दक्षिणी (कर्नाटकी) ताल और ताल-पद्धति का अध्ययन। विभिन्न भारतीय अवनद्ध वाद्यों और उनका संक्षिप्त परिचय। तबला और मृदंग पखावज का तुलनात्मक अध्ययन और उनका इतिहास।
4. तान, आलाप, जोड़ झाला तथा ध्रुपद धमार, ख्याल,टप्पा,ठुमरी, तन्त्र वादन की गत तथा उनके प्रकारों (मसीदखानी, रजाखानी) की व्याख्या।
5. समपदी तथा विसम पदी (Taals of Even and odd matras) तालों का तुलनात्मक अध्ययन।
6. प्रचलित ताल-लिपि पद्धतियों का तुलनात्मक अध्ययन।
7. समान मात्रा वाली तालों का तुलनात्मक अध्ययन।
8. लय,ताल अवनद्ध वाद्य अन्य संगीत सम्बन्धी सामान्य विषयों पर निबन्ध लिखने की क्षमता।

S.D.S.K.

(षष्टम-वर्ष (छठा), तबला,मृदंग तथा पखावज का पाठ्यक्रम)

क्रियात्मक परीक्षा 200 अंकों की होगी तथा शास्त्र के दो प्रश्न पत्र 50-50 अंकों के। पिछले सभी वर्षों का पाठ्यक्रम भी सम्मिलित है।

क्रियात्मक -

1. तबला और पखावज मिलाना। तबला के विद्यार्थी को पखावज बजाने का थोड़ा ज्ञान तथा मृदंग (पखावज) के विद्यार्थी तबला बजाने का थोड़ा ज्ञान। दोनां के बाज (वादन -शैली) मैं विभिन्नता का ज्ञान। सब प्रकार के गीतों तथा गतों (तन्त्र-वादन) के साथ तबला पर संगत करने और लहरे पर तबला सोलो बजाने का ज्ञान। नाच के कुछ अच्छे बोलो को सीख कर नाच के साथ भी तबला बजाने का साधारण ज्ञान। पखावज वालों के लिए ध्रुपद, धमार इत्यादि तथा वीणा के साथ संगत करने का ज्ञान। नाच के साथ भी संगत करने का साधारण ज्ञान।
2. पिछले पाठ्यक्रमों के सभी तालों का विस्तृत अध्ययन। नये, कठिन और सुन्दर बोल परन आदि सीखना। विभिन्न बाज और घरानों की कुछ खास चीजें सीखकर उनमें भेद दिखाना।
3. कैद-फरोदस्त, कुम्भ, बसन्त तथा सवारी 16 मात्रा तालों की ताली देना और तबले पर बजाना। चतुर्थ, पंचम और छठे वर्षों के तालों में कुछ सुन्दर मोहरे और ठेकों के प्रकार सीखना।
4. विभिन्न तालों को ताली देकर विभिन्न लयकारियों में बोलने का पूर्ण ज्ञान अभ्यास। टुकड़ों आदि को भी ताली सहित बोलना।
5. स्वतन्त्र वादन (सोलो) की विशेष तैयारी।
6. तबले के विद्यार्थियों को पखावज की तालों में भी स्वतन्त्र-वादन (सोलो) का साधारण ज्ञान। स्वतन्त्र वादन के लिए निम्नलिखित तालों की विशेष तैयारी :- तीनताल, झपताल, एकताल, आड़ा-चारताल, धमार , पंचम-सवारी, चारताल, सूलताल, गजझंपा, तेवरा, रूपक और लक्ष्मी ताल।

शास्त्र (प्रथम प्रश्न-पत्र)

1. पूरबी तथा पच्छिमी बाज के विभिन्न घरानों की वादन-शैलियों का तुलनात्मक अध्ययन। कोदऊ सिंह, खब्बे हुसेन, नाना पानसे एवं पर्वत सिंह की वादन शैलियों का सूक्ष्म अध्ययन। पखावज और तबले के बोलों में अन्तर। सोलो और साथ के बाज में अन्तर और दोनों क विधियों का विस्तृत वर्णन। संगत करने की कला। अवनद्ध वाद्यों में उन्नति के सुझाव। प्रसिद्ध तबला वादक और उनकी विशेषताएँ। स्वर और लय का सम्बन्ध। पाश्चात्य बीट (Beat)तथा रिद्म (Rhythm) का अध्ययन। पाश्चात्य ल पद्धति का साधारण-ज्ञान।

2. प्रथम वर्ष से षष्टम वर्ष तक के सब पारिभाषिक शब्दों तथा विषयों का विस्तृत एवं तुलनात्मक अध्ययन।

3. प्रथम वर्ष से षष्टम वर्ष तक के अप्रचलित तालों का अध्ययन तथा इन्हें प्रचलित करने का सुझाव।

4. छंद तथा पिंगल-शास्त्रों का ज्ञान।

5. परिभाषाः- स्वर विस्तार, बोल बाँट, बहलावा, चतुरंग, तराना तथा तिरवट।

6. प्रसिद्ध तबला अथवा मृदंग -वादकों का परिचय तथा उनकी वादन-शैलियों का आलोचनात्मक अध्ययन।

7. ताल, लय तथा संगीत-सम्बन्धित सामान्य विषयों पर निबन्ध लिखने की क्षमता।

द्वितीय प्रश्न-पत्र

क्रियात्मक- सम्बन्धी

1. पिछले वर्षों के सभी तालों तथा उनमें सीखी सामग्री को भारखंडे तथा विष्णुदिगम्बर तालिपियों में लिखने का पूर्ण ज्ञान।

2. पाठ्यक्रम के सभी तालों का तुलनात्मक अध्ययन।

3. तालों को विभिन्न लयकारियों में लिखने का पूर्ण ज्ञान।

4. दक्षिणी तथ उत्तरी भारतीय ताल- पद्धतियों का तुलनात्मक अध्ययन।

5. पाश्चात्य स्टाफ-लिपि का ज्ञान।

6. नृत्य के कुछ बोलों तथा तोड़ों का ज्ञान।

7. विभिन्न प्रकार की संगीत के साथ उचित अवनद्ध वाद्यों पर संगत का ज्ञान।

S.D.S.K.K.